खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे

'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' यह कहावत आज नेपाल के माओवादी सरगना पुष्प दहल कमल उर्फ प्रचण्ड पर सटीक बैठती है। 'प्रचण्ड' नेपाल के अन्दर पिछले डेढ़ दशक से जारी माओवादी हिंसा का जनक माना जाता है। इस माओवादी हिंसा के कारण पिछले डेढ़ दशक में नेपाल के अन्दर हजार निर्दोष नागरिक 13 हजार पुलिस और सेना के जवान शहीद हुए। माओवादियों का 6 तथा लगभग उद्देश्य प्रारम्भ से ही नकारात्मक था।'हिंसा की नोक पर सत्ता' यह एकमात्र उद्देश्य माओवादियों का था और प्रचण्ड ने इसी का अनुसरण भी किया। इस डेढ़ दशक में सर्वाधिक दुःखद पक्ष नेपाल के राजनेताओं, बुद्धिजीवियों तथा जनता के नजरिये का रहा जिन्होंने प्रचण्ड के बर्बर एवं हिंसक चेहरे को हमेशा नजर अन्दाज करने का प्रयास किया। उसके हर जायजनाजायज हरकत की अनदेखी की गई। हिमालयी - राष्ट्र नेपाल की आय का बड़ा स्रोत पर्यटन रहा है। माओवादी हिंसा ने नेपाल के -पर्यटन पर बुरा असर डाला। उद्योगधन्धे बन्द हो गये। बहुत बड़ी आबादी पलायन को मजबूर हो गई। लोकतंत्र बहाली के लिये जिन सात दलों के गठबन्धन को राजा ज्ञानेन्द्र ने सत्ता सौंपी थी, उन्होंने लोकतांत्रिक प्रक्रिया बहाली के लिये ईमानदारीपूर्वक कोई प्रयास नहीं किया। इसके विपरीत वह हर कार्य किया जो माओवादी चाहते थे। संविधान सभा चुनाव के पूर्व जिन माओवादी उग्रवादियों को अपने हथियार सौंपने थे, उन्होंने हथियार नहीं सौपें अपितु बन्दूक की नोक पर सत्ता पर काबिज होने का प्रयास किया। यद्यपि वे इसमें सफल नहीं हुए लेकिन सबसे बड़े दल के रूप में माओवादी नेपाल में उभरे। चुनाव के पूर्व माओवादी सरगना प्रचण्ड ने सीधे सीधे-धमकी भी दी कि वे अगर चुनाव हार गये तो सत्ता पर जबरन कब्जा कर लेंगे। फिर उन्होंने कहा कि वे नेपाल के पहले राष्ट्रपति होंगे। जब मई 28, को राजतंत्र को समाप्त करके नेपाल नरेश ने माओवादियों 2008 के दबाव में नेपाल को गणतंत्र घोषित किया तथा सभी अधिकार प्रधानमंत्री को

सौंप दिये तो माओवादी सरगना ने नेपाल का प्रधानमंत्री बनने का सपना देखना प्रारम्भ कर दिया। यही नहीं वहाँ की सरकार ने प्रचण्ड को खुश रखने के लिये शान्ति का सर्वोच्च पुरस्कार भी प्रदान किया। लेकिन इस सबके बावजूद प्रचण्ड और माओवादी न कभी शान्ति के पक्षधर रहे हैं और न ही उन्हें शान्ति पर आज भी विश्वास है। माओवादी जबरन सत्ता पर काबिज होना चाहते हैं। डेढ़ दशक में अगर नेपाल का राजनीतिक नेतृत्व अपने राष्ट्र और उसकी प्राचीन परम्परा के बारे में सोचा होता तो इस दुःखद त्रासदी से नेपाल को नहीं गुजरना पड़ता। यह स्थिति लगातार बिगड़ती गई। आज विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र रहा नेपाल अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है। एकीकृत नेपाल का प्रतीक रहे राजतंत्र को समाप्त कर दिया गया। देर से ही सही अपनी एकता के महत्त्व को जब वहाँ के राजनीतिक दलों ने समझा तो राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति दोनों पद गैर माओवादियों को अर्थात् शान्तिपूर्ण लोकतांत्रिक प्रणाली पर विश्वास करने वाले नेताओं को प्राप्त हुआ। अगर यही एकता बनी रही तो प्रधानमंत्री का पद भी किसी राजनीतिक व्यक्ति को प्राप्त होगा न कि हिंसा के बल पर सत्ता को जबरन काबिज करने की मंशा पाले माओवादियों को। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के पद पर गैर माओवादियों की विजय जहाँ प्रचण्ड और उनके सहयोगियों की राजनीतिक तथा कूटनीतिक विफलता है वहीं डेढ़ दशक में नेपाल में अच्छी शुरुआत का भी संकेत है। आखिर 'अंधेरे के बाद ही उजाला होगा' की उक्ति नेपाल में चरितार्थ हो, यही हमारी कामना है। माओवादी सरगना की खिसियाहट स्वाभाविक है। इसकी तुलना केवल इस कहावत से ही की जा सकती है कि "खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे"।